

## हिन्दी विभाग

### Course Outcomes

M.A.

M.A. I Year I Sem, हिन्दी साहित्य का इतिहास (G-1025)

एम०ए० हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य तथा हिन्दी पद्य का समेकित अध्ययन करना अपेक्षित है। अध्ययन की इस प्रक्रिया में उन्हें हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की विविध विचाराधाराओं, परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, कवियों तथा उनकी रचनाओं की जानकारी अवश्यक है। साथ ही सभी युगों के नामकरण, काल विभाजन के संदर्भ में कौन-कौन से बिन्दुओं को ध्यान में रखा गया तथा किन आधारों पर नामकरण किया गया इसकी जानकारी भी होनी चाहिए। इन्हीं सब आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए हिन्दी साहित्य के इतिहास के पाठ्यक्रम का अध्ययन आवश्यक है।

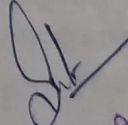
M.A. I Sem, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन काव्य (G-1026)

हिन्दी के आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि में अपभ्रंश का बड़ा योगदान है। आदिकालीन काव्य, प्रबंध, मुक्तक आदि अनेक काव्य रूपों में रचा गया है तथा इसकी अभिव्यंजना अपभ्रंश, अवहट्ठ तथा देशी भाषा में की गई है। इस साहित्य ने परवर्ती कालों को प्रभारित करने में सक्रिय तथा सक्षम भूमिका का निर्वाह किया है। अतः परवर्ती काल के साहित्य का अध्ययन किए बिना इस काल के साहित्य का मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। पूर्व मध्यकालीन (भक्तिकालीन) साहित्य लोक-जागरण और लोक-मंगल से परिपूरित था। इसने भारत की भावनात्मक एकता और सांस्कृतिक परंपरा को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। उस समय के साहित्य में भाषा तथा कला के सौन्दर्य को परखने तथा समाज और संस्कृति को जानने के लिए आदिकालीन व भक्तिकालीन कविता का अध्ययन आवश्यक है।

M.A. I Sem, नाटक एवं रंगमंच (G-1027)

नाटक साहित्य की महत्वपूर्ण तथा प्राचीन विधा है। आचार्य भरत के नाट्य चिन्तन से लेकर आधुनिक भारतीय तथा पाश्चात्य नाट्य चिन्तन के प्रसिद्ध चिन्तकों का अध्ययन नाटक के स्वरूप को समझने के लिए आवश्यक है। नाटक यथार्थ एवं कल्पना के मेलजोल से विलक्षण रूप धारण कर वृष्टा एवं पाठक दोनों को मनोरंजन तो प्रदान करता ही है साथ ही साथ अपने साध्य में दृश्य होने के कारण रंगमंच से भी सीधे जुड़ा हुआ है। हिन्दी नाटक में ऐतिहासिकता के साथ-साथ जीवन की विसंगतियाँ और विद्रूपताएं भी दृष्टिगत होती हैं। इन सबको जानने-समझने के लिए इस विधा का अध्ययन आवश्यक है।

M.A. I Sem, प्रयोजनमूलक हिन्दी (G-1028)

  
प्रो० सुनीता  
हिन्दी विभाग  
रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज  
मेरठ (उ०प्र०)

आज हिन्दी का प्रयोग साहित्य, सृजनात्मक लेखन के साथ-साथ कार्यालय, पत्रकारिता, कम्प्यूटर तथा अनुवाद के क्षेत्र में भी अधिकाधिक हो रहा है। कार्यालयी हिन्दी की संरचना साहित्यिक हिन्दी तथा सृजनात्मक हिन्दी से अलग है। इसी तरह इन्टरनेट तथा अनुवाद में हिन्दी का स्वरूप अलग है। हिन्दी के इन विविध रूपों का अध्ययन करना हिन्दी के आधुनिक स्वरूप को जानने, समझने के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया में कार्यालयी हिन्दी के औपचारिक लेखन के स्वरूप का अध्ययन अपेक्षित है, साथ ही, अनुवाद के विविध रूप, प्रक्रिया एवं प्रविधि तथा उनके क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी के लिए यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है।

M.A. II Sem, उत्तरमध्यकालीन काव्य (G- 2025)

जीवन के इहलौकिक पक्ष का संज्ञान भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि पारलौकिकता का द्वार यहीं से खुलता है। चार पुरुषार्थ में काम का एक स्तम्भ होना गहरे अर्थ की व्यंजना करता है जैसे काम और कला घनीभूत भाव से जुड़े हैं, वैसे की रति और रीति भी जहाँ 'रति' मानव हृदय की मूल प्रवृत्ति है, वहीं 'रीति' उसे मनोवांछित अभिव्यंजना देती है। हिन्दी साहित्य का रीतिकाल इन्हीं मनोवृत्तियों से जुड़ा हुआ है। तदयुगीन परिस्थितियों के कारण प्रेम के श्रृंगारिक रूप की संपृक्ति बढ़ी रसिकता और शास्त्रीयता का सुखद संयोग घटित हुआ। जीवन के मधुर पक्ष को भी ठीक से समझने के लिए रीति अथवा श्रृंगारकाल का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

M.A. II Sem, कथा-साहित्य (G- 2026)

हिन्दी गद्य की विधाओं में कहानी एवं उपन्यास सर्वाधिक विकसित तथा लोकप्रिय है। सम्प्रति उसने शास्त्र का रूप धारण कर लिया है, अतः इस विधा का विस्तृत अध्ययन अपेक्षित है।

M.A. II Sem, सूरदास (G-2027)

हिन्दी के कालजयी रचनाकार सूरदास का अध्ययन करना आवश्यक है, उन्होंने चिंतन और सृजन के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान दिया है और उनका लेखन आज भी प्रासंगिक है। इसके अध्ययन से सूरदास की साहित्यिक दृष्टि को भी समझने में मदद मिलेगी।

M.A. II Sem, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा (G- 2028)

साहित्य आद्यंत एक भाषिक निर्मित है। साहित्य के गंभीर अध्ययन के लिए मासिक व्यवस्था का सुस्पष्ट सर्वांगीण ज्ञान अपरिहार्य है। भाषा विज्ञान भाषा की वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रणाली के रूप में भाषिक इकाईयों तथा भाषा संरचना के विभिन्न स्तरों पर उनके अंतरसंबंधों के विन्यास को आलोकित कर न केवल अध्येता को भाषिक अंतर्दृष्टि देता है अपितु भाषा विषयक विवेचन के लिए एक निरूपक भाषा भी प्रदान करता है। मूल भाषा व्यवस्था पर आरोपित द्वितीयक साहित्यिक व्यवस्था की भाषिक प्रकृति की स्वीकृति, प्राचीन भारतीय एवं अधुनातन पाश्चात्य साहित्य चिंतन में समान रूप से लक्षणीय है। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाषा के साहित्येतर, प्रयोजनमूलक रूपों के अध्ययन में भी भाषा वैज्ञानिक चिंतन का लाभ उतना ही महत्वपूर्ण है। भाषा वैज्ञानिक आधार पर हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक विकासक्रम, भौगोलिक विस्तार, भाषिक स्वरूप, विविधरूपता तथा हिन्दी में कम्प्यूटर सुविधाओं विषयक

प्रो० सुनील  
हिन्दी विभागाध्यक्ष

रघुनाथ गर्लर्स (पी०जी०) कॉलेज  
मेरठ (उ०प्र०)

जानकारी एवं देवनागरी के वैशिष्ट्य, विकास और मानकीकरण का विवरण हिन्दी के अध्येता के लिए अत्यंत उपयोगी है।

M.A. II Year III Sem, आधुनिक काव्य (छायावाद पर्यंत)(G- 3025)

आधुनिक हिन्दी काव्य पुनर्नवा के रूप में नवीन भावभूमि एवं वैचारिक गतिशीलता लेकर अवतरित हुआ। आधुनिकता, इहलौकिकता, विश्वजनीनता एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। उपेक्षित विषय भी यहाँ सार्थक एवं प्रासंगिक हो गए हैं। उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध से अद्यावधि तक की संवेदनाएं, भावनाएं एवं नूतन विचार सारणियाँ इसमें अभिव्यक्त हुई हैं। मुकम्मल मनुष्य इसमें अभिव्यंजित हुआ है। विविध धाराओं में प्रवाहमान आधुनिक हिन्दी काव्य प्रेरणा और ऊर्जा का अजन स्रोत है। अतः संवेदना तथा ज्ञान क्षितिज के विस्तार के लिए इसका अध्ययन अत्यंत आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

M.A.III Sem, काव्यशास्त्र (भारतीय एवं पाश्चात्य) (G-3026)

रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इनसे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवत्ता की वास्तविकता परखी जा सके। सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के साथ रचना का आस्वाद प्राप्त करने, रचना को उसकी समग्रता से समझने और जानने-परखने के लिए भारतीय काव्यशास्त्र का अध्ययन समीचीन है। वहीं पाश्चात्य काव्य शास्त्र का अध्ययन भी आवश्यक है।

M.A.III Sem, पत्रकारिता-प्रशिक्षण (G- 3027)

पत्रकारिता आज जीवन समाज की धड़कन बन गई है। सिमटते विश्व में स्नायु तंतुओं के समान काम कर रही है। दैनिक समाचार पत्र से लेकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, वार्षिक पत्रिकाओं, प्रिंट मिडिया, इलेक्ट्रॉनिक मिडिया, इंटरनेट आदि में इसका विकसित स्वरूप देखा जा सकता है। इसके बिना आज आदमी का रहना कठिन है। साहित्यिकता के साथ-साथ रोजगारपरकता की आकांक्षा की पूर्ति भी इससे होती है। पुनर्जागरण, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व, नारी तथा दलित जागरण में इसकी क्रांतिकारी भूमिका रही है। अतः इसका अध्ययन आज की अनिवार्यता बन जाती है।

M.A. IV Sem, छायावादोत्तर काव्य (G- 4025)

छायावादी कृतित्व में यथार्थ और स्वप्न दोनों की समान स्थिति थी। राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक जागरण की प्रवृत्ति अपनी समस्त शक्ति सामर्थ्य तथा कतिपय नवीन प्रयोगवादिता के साथ छायावादोत्तर काव्य में विकसित होती रही। यहाँ प्रयोग और प्रगतिशीलता के स्वर जोर पकड़ते गए जिसके बीज-बिन्दु छायावाद में पड़ चुके थे औद्योगीकरण के साथ-साथ शोषण की वृत्ति तथा अन्य सामाजिक विद्रूपताओं ने प्रगतिशील साहित्यांदोलनों को बढ़ावा दिया। नये मार्ग की अन्वेषी विचारधारा ने प्रयोगवादी काव्यधारा के रूप में अपने को विकसित किया। स्वतंत्रता के बाद मोहभंग की स्थिति ने जन्म लिया स्वप्न अधूरे रहे, संकल्प टूटे, आक्रोष और विद्रोह की प्रवृत्ति व्यापक पैमाने पर परिलक्षित हुई। विज्ञान ने बौद्धिकता का विकास किया, फलस्वरूप नये नये बिंब, प्रतीक एवं अभिव्यंजना-रूप विकसित हुए।

प्रो० सुनीता  
हिन्दी विभाग  
रघुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज  
मेरठ (उ०प्र०)

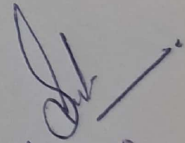
अंतर्विरोधी स्थितियों ने मूल्य-विघटन, तनाव-संक्रमण, मोहभंग की स्थिति पैदा की, जिसकी अभिव्यंजना विविध रूपों में हुई। वर्तमान समस्याओं, संवेदनाओं की व्यापकता विश्वजनीन हो गई है। इस वैश्विक संदर्भ की जानकारी और समझदारी के लिए छायावादोत्तर तथा समकालीन साहित्य का विशेष अध्ययन परमावश्यक है।

M.A. IV Sem, भारतीय साहित्य (G- 4027)

भारतीय भाषाओं में हिन्दी साहित्य का स्थान अन्य प्रांतीय भाषाओं की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण है। इसलिए हिन्दी साहित्याध्ययन को अधिकाधिक गंभीर तथा प्रशास्त बनाना अत्यंत आवश्यक है। एक समेकित भारतीय साहित्य की रूपरचना के लिए हिन्दी का भारतीय संदर्भ सर्वथा प्रासंगिक है। इस दृष्टि से हिन्दी के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए भारतीय भाषाओं के साहित्य का ज्ञान अनिवार्य है।

M.A. IV Sem, हिन्दी आलोचना (G- 4028)

हिन्दी साहित्य की कुछ विधाएँ इतनी विकसित हो गयी हैं कि उनके स्वतंत्र सघन अध्ययन के लिए पृथक वैकल्पिक प्रश्नपत्र की आवश्यकता है। हिन्दी आलोचना ऐसी ही एक विधा है। इसका विस्तृत ज्ञान प्राप्त करके विद्यार्थी सफल आलोचक हो सकता है, जो हिन्दी पठन-पाठन का मूल प्रायोजन है।



प्रो० सुनीता  
हिन्दी विभाग  
रधुनाथ गर्ल्स (पी०जी०) कॉलेज  
मेरठ (उ०प्र०)